पाठ 9. नन्हा खरगोश

पाठ का परिचय

एक जंगल में अनेक पशु-पक्षी सुख और शांति से रहते और एक-दूसरे की सहायता करते थे। उस वन में दो खरगोश भी रहते थे। उनका एक नन्हा, प्यारा बच्चा था – बनी। जब भी माता-पिता भोजन की तलाश में जाते, जंगल के सभी जानवर बनी की देखभाल करते थे। एक दिन बनी के माता-पिता भोजन की तलाश में जंगल से दूर चले गए। शाम तक वे घर नहीं लौटे। बेचारा बनी बहुत उदास था। जब रात हो गई और उसके माता-पिता नहीं आए तो बनी रोने लगा। जंगल के सभी जानवरों ने उसे बहुत समझाया। सभी उसके साथ रातभर जागते रहे। सुबह होने पर भी सभी ने उन्हें ढूँढ़ा लेकिन वे नहीं मिले। बनी ने न कुछ खाया न पीया। रोते-रोते वह थक गया था। इतने में धीरे-धीरे कूदते हुए बनी के माता-पिता वहाँ आ पहुँचे। सभी ने उनसे कल घर न आने का कारण पूछा। वे बोले कि जिस खेत में वे घास खा रहे थे उस खेत के किसान के बेटे ने उन्हें डंडे से पीटा। चोट लगी होने के कारण वे नहीं आ सके। माता-पिता की बात सुनकर बनी को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा, "मैं ऐसे बच्चों के साथ कभी नहीं खेलूँगा जो पशुओं से प्रेम नहीं करते।"

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

पशुओं को भी ईश्वर ने इस धरती पर हमारी तरह ही भेजा है। जीने का जितना अधिकार हमें है उतना ही अधिकार उन्हें भी है। हमें पशुओं को कभी नहीं मारना चाहिए। उनसे प्रेम करना चाहिए क्योंकि वे भी प्रकृति का हिस्सा हैं और उन्हें भी जीने का अधिकार है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका शुद्ध उच्चारणसहित आदर्श वाचन करें। बच्चे पुस्तक पर सही स्थान पर उँगली रखते हुए सुनें। बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ। बीच-बीच में प्रश्न पूछते रहें। बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्नों के आधार पर चर्चा करें –

- आपसी सहयोग क्यों आवश्यक है?
- माता-पिता की छत्र-छाया में बच्चे कैसा महसूस करते हैं?
- बच्चों को रात के समय अकेले बाहर क्यों नहीं जाना चाहिए?